www.rojgarsamachar.gov.in
www.employmentnews.gov.in

सत्यमेव जयते

अंग्रेजी एवं उर्दू में भी प्रकाशित
वार्षिक शुल्क : ₹ 350

रोज़गार समाचार

सभी को अवसर

साप्ताहिक

खण्ड 40 अंक 4 पृष्ठ 48 | नई दिल्ली 25 अप्रैल - 1 मई 2015 | ₹ 8.00

भर्ती में सोशल मीडिया की भूमिका

सौम्या पंडित

वैश्वीकरण के उदय के साथ भौगोलिक सीमाएं सिमट गयी हैं. यह प्रवृत्ति अब विभिन्न कंपनियों और संगठनों की भर्ती पद्धतियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी है. वैश्वीकरण ने अनेक ऐसी चीजें प्रदान की हैं, जो जन समुदायों के दृष्टिकोण में काफी हद तक बदलाव लाने में सफल रही हैं. वैश्विक जगत के इन उपहारों में सोशल मीडिया भी एक है, जिसे मनोरंजन के एक स्रोत के रूप में आगे बढ़ाया गया था लेकिन अब यह भर्ती के प्रमुख उपकरणों में से एक के रूप में उभर रहा है.

सामाजिक भर्ती या सोशल हायरिंग के अंतर्गत सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइटों की मदद से संभावित कर्मचारियों की भर्ती की जा रही है. लिंकेडिन, फेसबुक, ट्विटर, वीडियो, इंस्टेग्राम, पिंट्रेस्ट, एक्सिंग, गूगल+और ब्रेंडआउट आदि सोशल मीडिया साइट उन स्रोतों में शामिल हैं, जिनका इस्तेमाल भर्ती प्रयोजनों के लिए सबसे अधिक किया जा रहा है. इस प्रकार सोशल मीडिया भर्ती सोशल नेटवर्क और भर्ती पद्धतियों का आमेलन है.

नौकरी तलाश करने वालों और भर्ती करने वालों द्वारा सोशल मीडिया का इस्तेमाल किए जाने के बारे में जॉबवाइट द्वारा किए गए नवीनतम अध्ययन के अनुसार काम की तलाश करने वाले 86 प्रतिशत लोगों का अकाउंट 6 ऑनलाइन सोशल नेटवर्कों–फेसबुक, लिंकेडिन, गूगल+ ट्विटर, इंस्टेग्राम, पिंट्रेस्ट में से किसी एक में अवश्य होता है. इससे यह भी पता चलता है कि नौकरी तलाश करने वालों में 76 प्रतिशत लोगों को अपने वर्तमान नियोक्ता फेसबुक के माध्यम से मिलते हैं. लिंकेडिन एक ऐसी साइट है जहां काम की तलाश करने वाले लोग रोजगार की तलाश संबंधी ज्यादातर गतिविधियों को अंजाम देते हैं, जिनमें जॉब-रेफरल और नेटवर्किंग शामिल हैं. ट्विटर पर वे सहायता की मांग करते हैं और अन्य लोगों से सलाह मांगते हैं. नौकरी पाने

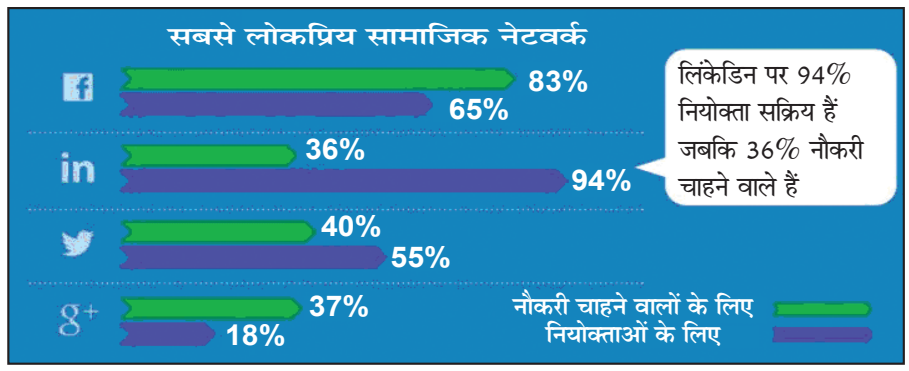

के इच्छुक व्यक्ति फेसबुक को अधिक पसंद करते हैं जबकि नियोक्ता लिंकेडिन को वरीयता देते हैं, जबकि भर्ती करने वाले लोग उम्मीदवारों की तलाश करते समय लिंकेडिन का सहारा लेने को वरीयता देते हैं. सर्वेक्षण से यह भी पता चलता है कि आप जिस व्यक्ति को जानते हैं उसका महत्व बहुत अधिक होता है, क्योंकि नौकरी पाने वालों में करीब 40 प्रतिशत को रोजगार व्यक्तिगत अनुशंसा के अनुसार और 62 प्रतिशत नियोक्ता उच्च गुणवत्तापूर्ण उम्मीदवार के स्रोत के रूप में रेफरल पद्धति को तरजीह देते हैं.

सोशल मीडिया पर आमतौर पर अपनाई जाने वाली भर्ती नीतियां:

विभिन्न प्रकार के पोर्टल कर्मचारियों को आकर्षित करने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाते हैं. फेसबुक किसी कंपनी या संगठन की उपस्थिति को बड़ी संख्या में 'लाइक्स' यानी पसंदों के जरिए उजागर करती है. इसी प्रकार ट्विटर इस्तेमालकर्ताओं को उन कंपनियों के पेज फॉलो करने की अनुमति प्रदान करता है जो अपने संगठन की भर्ती संबंधी जानकारी और अन्य पहलुओं को प्रदर्शित करते हैं. नई रिक्तियों और कंपनी की घटनाओं के बारे में लाइव चैट (प्रत्यक्ष वार्तालाप) और परामर्श के विकल्प प्रदान किए जाते हैं. इस्तेमालकर्ता अधिकतर व्यावसायिक कारणों से लिंकेडिन को एक्सेस करते हैं. लिंकेडिन पर ओपन डिस्कर्शंस (मुक्त वार्तालाप), वीडियोज (चित्र) और टेस्टिमोनिअल्स (अनुशंसाओं) जैसे उपकरण होते हैं. इस पर रोजगार तलाश करने वालों के लिए एक कॅरिअर पेज भी है. यू-ट्यूब साइबर स्पेस में भर्तीकर्ताओं के लिए एक मंच उपलब्ध कराता है, जो उनके वीडियो दिखाता है और इसे ज्यादा से ज्यादा संख्या में दर्शकों का ध्यान आकृष्ट करने में मदद मिलती है. नए सोशल टूल्स निरंतर सृजित किए जा रहे हैं, अतः सोशल मीडिया में वर्तमान प्रवृत्तियों और इंटरनेट प्रौद्योगिकी की बेहतर जानकारी रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है.

सामाजिक भर्ती सॉफ्टवेयर:

सोशल मीडिया नेटवर्क के जरिए भर्ती और रोजगार प्रदान करने की प्रक्रियाओं में वृद्धि के लिए सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल में गुणात्मक और मात्रात्मक आधुनिकता की आवश्यकता पड़ती है. सामाजिक भर्ती सॉफ्टवेयर बाजार (ई-रिक्रूटमेंट का एक रूप) बृहत्त प्रतिभा प्रबंधन साफ्टवेयर के क्षेत्र में शामिल किया जाता है.

सामाजिक भर्ती सोशल नेटवर्किंग, रिक्रूटमेंट और अब क्लाउड कम्प्यूटिंग जैसे अनेक तेजी से बदलते हुए अंतर-अनुभागों पर निरंतर बढ़ती जा रही है. मोबाइल रिक्रूटमेंट, विशेषकर टेबलेट और स्मार्ट फोन के इस्तेमाल के साथ, भी एक अन्य ज्वलंत माध्यम बन गया है.

भर्ती के लिए सोशल मीडिया नेटवर्क के इस्तेमाल के लाभ:

आज सभी संप्रदायों, जातियों, धर्मों और देशों के लोग सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर दिखाई देते हैं. शुरू में इसका उद्देश्य समान विचारों वाले व्यक्तियों के साथ वार्तालाप करना और दोस्त बनाना था. परंतु, अब इनका दायरा विस्तृत और संभावनाएं व्यापक हो गई हैं. अब कोई भी व्यक्ति अपने बारे में संक्षिप्त विवरण के अंतर्गत शैक्षिक योग्यता, रुचि के विषय, कार्यानुभव, शौक आदि की जानकारी साइट पर प्रदर्शित कर सकता है. किसी भी नियोक्ता को इंटरव्यू कॉल भेजने से पहले ही किसी उम्मीदवार के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त हो जाती है. नियोक्ता और कर्मचारी एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं क्योंकि सोशल मीडिया पर बड़ी संख्या में लोगों का विवरण उपलब्ध होता है. रिक्त पद भी शीघ्रता से विज्ञापित किए जा सकते हैं. सोशल नेटवर्कों पर भर्ती पद्धति शुरू होने से कर्मचारियों और नियोक्ताओं के बीच परस्पर संवाद के स्तरों में सुधार हुआ है.

(शेष पृष्ठ 47 पर)

रोज़गार सारांश

भारतीय स्टेट बैंक

भारतीय स्टेट बैंक को 2000 परिवीक्षा अधिकारियों की आवश्यकता.
अंतिम तिथि : 02.05.2015 (पृष्ठ 15-17)

सं.लो.से.आ.

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सहायक कमांडेंट) परीक्षा, 2015 की अधिसूचना जारी
रिक्तियां : 304
अंतिम तिथि : 15.05.2015 (पृष्ठ 42-46)

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा विभिन्न पदों के लिए आवेदन आमंत्रित
अंतिम तिथि : 14.05.2015 (पृष्ठ 26-32)

सी.पी.सी.एल

चेन्नै पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड को 208 कनिष्ठ इंजीनियर सहायक IV की आवश्यकता
अंतिम तिथि : 11.05.2015 (पृष्ठ 34)

बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों, सशस्त्र सेनाओं, रेलवे और अन्य सरकारी विभागों की अन्य रिक्तियों के लिए अंदर के पृष्ठ देखें.

वेब विशेष

www.rojgarsamachar.gov.in पर वेब विशेष खण्ड के तहत निम्नलिखित आलेख उपलब्ध है:-

- किसानों के लिए : ज्ञान वर्धित सूचना कृषि क्षेत्र में प्रौद्योगिकी आधारित पहल

www.facebook.com/yojanaJournal
www.facebook.com/publicationsdivision

Follow us on: @Employ_News

Visit our facebook page
facebook.com/director.employmentnews

विदेशी भाषाओं में रोज़गार की संभावनाएं

राहुल के. शुक्ल और शिखा दीक्षित

हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं, जहां संचार अपने शिखर पर पहुंच गया है और दुनिया एक छोटे स्थान में सिमट गई है. इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आप इटली के किसी व्यक्ति को स्थानीय बाजार में सलवार-कमीज खरीदते हुए पाएं अथवा फ्रांस के किसी व्यक्ति को भारतीय दर्शन पर ग्रंथ खरीदते हुए देखें. भारतीय विद्यार्थियों, विद्वानों, आईटी व्यवसायियों और बड़े व्यापारियों को अपनी व्यक्तिगत और व्यावसायिक जरूरतों के लिए दुनिया-भर में भ्रमण करते हुए भी देखा जा सकता है. ऐसे में देशी या विदेशी भाषाओं की भूमिका में वृद्धि होना नितांत स्वाभाविक है. फिर भी, अन्य संस्कृतियों की बेहतर समझ के साथ विदेशी भाषाओं की अच्छी जानकारी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के माहौल में लाभप्रद हो सकती है.

अंग्रेजी को वैश्विक माध्यम के रूप में देखते हुए कुछ भाषाविद् विदेशी भाषाओं की प्रासंगिकता पर सवाल उठाते हैं. परंतु, अकेले अंग्रेजी सीखने से स्वयं पर सीमाएं लागू हो जाती हैं और इससे किसी भी व्यक्ति के शैक्षिक विकास में रुकावट आती है, उसकी भाषा और संस्कृति में प्रवीणता कम होती है, चिंतन क्षमता सीमित हो जाती है और अन्य देशों को समझने की अभिरुचि में कमी आती है. किसी विदेशी भाषा को सीखने से दुनिया को देखने के नए नजरिए का विकास होता है. इसके परिणाम स्वरूप वैश्विक समझ में वृद्धि होती है, जिससे अंतर-सांस्कृतिक वातावरण में अविश्वास और अज्ञानता दूर करने में मदद मिलती है. किसी व्यक्ति की जरूरतों और सांस्कृतिक इच्छाओं को समझने के लिए उसके देश की भाषा को समझने से बेहतर कोई तरीका नहीं हो सकता. यह सम्मान देने का प्रतीक है, जिससे संबंध सुधारने में मदद मिलती है. विदेशी भाषाएं निश्चय ही सौंदर्यपरक कारणों से भी सीखी जाती हैं. अनुवाद कभी भी अभिप्राय:, शैली और मूल की बेजोड़ता को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता. अतः मूल भाषाएं बाहरी साहित्य, संगीत, कला और रंगमंच को समझने और उनकी जानकारी प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं.

विदेशी भाषा का चयन

हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों को विदेशी भाषाओं के अध्ययन के अधिक विकल्प प्रदान नहीं किए जाते हैं. स्कूलों में गिनी-चुनी आधुनिक यूरोपीय भाषाएं जैसे फ्रेंच, जर्मन या स्पेनिश, ही पढ़ाई जाती हैं. परंतु कालेजों या प्राइवेट भाषा-प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में सीखने वालों को अपनी पसंद की भाषा सीखने के अवसर मिल सकते हैं. ज्यादातर विकल्पों का चयन शिक्षार्थी की व्यक्तिगत रुचि अथवा किसी विशेष भाषा, देश या संस्कृति के प्रति उसके लगाव पर निर्भर करता है. फिर भी, भाषा का चयन करते समय विद्यार्थी को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वह किस प्रकार का कॅरिअर चुनना चाहता/चाहती है. यह पसंद युक्तिसंगत होनी चाहिए. उदाहरण के लिए अरबी एक ऐसी भाषा है जो मोरिटेनिया से लेकर फारस की खाड़ी तक बोली जाती है. ये भाषा उन व्यापारी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य हो सकती है जो इस क्षेत्र में व्यापार के इच्छुक हों. फिर भी, मध्य-पूर्व के कुछ हिस्सों में अंग्रेजी में व्यापार करना संभव है. लेकिन इससे बाहरी व्यक्ति को हमेशा घाटे की स्थिति में रहना पड़ता है. मध्य-पूर्व का ऊर्जा बाजार पर भी भारी प्रभाव पड़ता है. विश्व अर्थव्यवस्था में यह बाजार बड़ी भूमिका अदा करता है. अतः अरबी को विदेशी भाषा के रूप में सीखने से अरब जगत में अनेक अवसर मिल सकते हैं.

फ्रेंच सिर्फ फ्रांस की सरकारी भाषा नहीं है, बल्कि अफ्रीकी महाद्वीप, कैरीबियाई और अरब जगत के कुछ हिस्सों में भी यह सरकारी कामकाज की भाषा है. यह अंग्रेजी के बाद कनाडा की दूसरी सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है. फ्रेंच भाषा पर अच्छा नियंत्रण रखने से फ्रांस के अलावा फ्रेंचभाषी विश्व के अन्य हिस्सों में भी फ्रांसीसी कंपनियों में रोजगार के अवसर खुलते हैं. इसके अतिरिक्त फ्रेंच सीखने से महत्वपूर्ण वैज्ञानिक साहित्य की जानकारी प्राप्त करने के अवसर भी खुलते हैं जो गणित, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान में निहित हैं. इससे फ्रांसीसी भाषा के महान साहित्य तक पहुंच कायम करने और मार्सेल प्रोउस्ट, गुस्तावे फ्लोबर्ट, वोल्तेयर, इमाइल ज़ोला, ज्यांपॉल, सात्रे आदि महान लेखकों को पढ़ने का अवसर भी मिलता है.

जर्मन भाषा, जो विशेष रूप से इंजीनियरी की भाषा कही जाती है, का इस्तेमाल स्कंडिनेवियन और अन्य पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ-साथ जर्मनी में किया जाता है. वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास में सर्वाधिक योगदान करने वाले देशों में जर्मनी का तीसरा स्थान है. इसे देखते हुए भावी अनुसंधानकर्ताओं के लिए जर्मन सीखने से जर्मनी में अध्ययन करने और रोजगार के अद्भुत अवसर मिल सकते हैं. इसके अलावा इंजीनियरों के लिए जर्मनी व्यावसायिक तरक्की का बेहतर स्थान हो सकता है.

हेब्रू इस्राइल की सरकारी भाषा है. हालांकि समूचे इस्राइल में अंग्रेजी बोली जाती है, परंतु हेब्रू में प्रवीणता वाले लोगों को तरजीह दी जाती है. इसके अलावा अमरीका के बाद इस्राइल दूसरा सबसे बड़ा देश है जिसकी सर्वाधिक कंपनियां नेसडेक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हैं. इसलिए हेब्रू में प्रवीणता और इस्राइली संस्कृति की अच्छी जानकारी अत्यंत उपयोगी हो सकती है.

इटेलियन उन लोगों के लिए रुचिकर हो सकती है जो सौंदर्यपरक कारणों से विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं. इटेलियन भाषा धर्म, संगीत, कला, ओपेरा या वास्तुशिल्प के विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है. जापान अत्यंत समृद्ध राष्ट्र है जिसकी अर्थव्यवस्था एशिया में सर्वाधिक विविध है. इसके अलावा जापान का आटोमोबाइल उद्योग तथा अन्य विनिर्माण वस्तु उद्योग विकास की संभावनाओं से ओतप्रोत है. ऐसे में जापानी सीखना अनेक क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएं बढ़ा सकता है. इसके अतिरिक्त इंटरनेट पर अंग्रेजी और चीनी भाषा के बाद जापानी भाषा का तीसरा स्थान है. भविष्य में यह बेहतर लक्षित बाजार हो सकता है.

(शेष पृष्ठ 48 पर)

दिल्ली पोस्टल पंजीकरण संख्या डीएल-एसडब्ल्यू-1/4100/2015-17 यू (सी) 107/2015-17 पूर्व शुल्क के बिना डाक में डालने की अनुमति आर.एन.आई. 28729/76 एन.डी.पी.एस.ओ. नई दिल्ली 25/27.04.2015 (₹ 8) प्रकाशन तिथि : 23.04.2015

विदेशी भाषाओं..

(पृष्ठ 1 का शेष)

मैंडारिन करीब 87.3 करोड़ लोगों की मातृभाषा है जो इसे विश्व में सर्वाधिक लोगों की प्रथम भाषा का दर्जा प्रदान करती है. चीनी गणराज्य और ताइवान के अलावा मैंडारिन चीनी भाषा इंडोनेशिया, थाईलैंड, सिंगापुर और फिलिपीन्स, मंगोलिया और मलेशिया के प्रमुख एवं प्रभावशाली चीनी समुदायों में बोली जाती है. चीन की अर्थव्यवस्था आज दुनिया में सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है. इसके अतिरिक्त चीन सबसे बड़ा व्यापार बन चुका है; नतीजतन कंपनियों को ऐसे व्यापार कार्यकारियों की तलाश है जो चीनी भाषा बोल सकें और चीनी समाज में प्रभावकारी ढंग से व्यापार कर सकें.

रूसी भाषा उन छह आधिकारिक भाषाओं में से एक है जिन्हें संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता दी गई है. रूस आज भी दुनिया के सबसे बड़े तेल उत्पादकों में से एक है. देश के आकार और प्राकृतिक संसाधनों को देखते हुए रूस अनेक कंपनियों के लिए अनुकूल व्यापारिक लक्ष्य रहा है. इस प्रकार, रूसी भाषा व्यापार भागीदारों के साथ कारगर सम्प्रेषण के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है.

विदेशी भाषा कौशल बढ़ाने के तरीके

भाषाएं कम आयु में सीखना अच्छा रहता है. यदि आप अल्पायु में ही भाषा सीखना शुरू कर देते हैं तो अधिक फायदेमंद रहता है. इसके अलावा किसी खास भाषा पर नियंत्रण करने के लिए अभ्यास अनिवार्य होता है.

नौसिखियों के लिए सलाह

प्रारंभ में, किसी भी नौसिखिए के लिए, यह हमेशा उचित होता है कि वह लक्षित भाषा में प्रवीणता पाठ्यक्रम में प्रवेश ले. ऐसे पाठ्यक्रम बुनियादी शब्दावली और व्याकरण सीखने में विद्यार्थी की मदद करते हैं. इसके अतिरिक्त निम्नांकित उपाय बुनियादी भाषा कौशल बढ़ाने में सार्थक हो सकते हैं:

- **अपने पसंदीदा गाने सुनें:** लक्षित भाषा में अपने पसंदीदा गानों की एक सूची तैयार करें और इंटरनेट से उनका संगीत डाउनलोड करें. शुरू में स्क्रिप्ट के साथ गानों को सुनने की कोशिश करें. जब आप ध्वनियों को पहचानना शुरू कर दें, तो संगीत का इस्तेमाल बंद कर दें. बिना संगीत के इस्तेमाल के ध्वनियों (शब्दों) को स्मरण रखने का अभ्यास करें. इस गतिविधि को दिन में कम से कम एक बार अवश्य करें. धीरे-धीरे आप पर्याप्त संख्या में शब्दों को समझने लगेंगे.
- **स्थितिपरक कॉमेडी और फिल्में देखें:** स्थितिपरक कॉमेडी और फिल्मों में प्रयुक्त भाषा आमतौर पर प्रमाणिक होती है. इस तरह के वीडियो देखने से शिक्षार्थी प्रामाणिक लक्ष्य भाषा सीख सकता है. प्रारंभ में आप संदर्भ को समझने के लिए उप-शीर्षकों का इस्तेमाल कर सकते हैं. परंतु, धीरे धीरे आप ध्वनियों (शब्दों/व्याकरण) से अर्थ निकालने की कला विकसित कर लेंगे और उप-शीर्षकों की आवश्यकता नहीं रहेगी.
- **स्वयं की शब्दावली सूची तैयार करें:** ऊपर वर्णित दोनों गतिविधियां शिक्षार्थी को नए शब्द चुनने में मदद करती हैं. आपको ध्यानपूर्वक प्रत्येक शब्द को उसके विशेष संदर्भ में प्रयोग सहित अपनी अभ्यास पुस्तिका में दर्ज करना चाहिए. इसके अतिरिक्त आप उन शब्दों को इस्तेमाल करने और रोजमर्रा की बोलचाल में शामिल करने का प्रयास करें. इसी प्रकार आप अपने चारों ओर जो कुछ देखते हैं, उससे संबंधित शब्दों की एक सूची तैयार करें. उदाहरण के लिए किसी मकान में अनेक ऐसी वस्तुएं हो सकती हैं, जिन्हें शिक्षार्थी को जानना चाहिए. इससे शिक्षार्थी की शब्दावली में बार बार काम आने वाले शब्द जुड़ते जाएंगे.
- **गलतियां करें:** गलतियां करने में संकोच न करें. यह सीखने का प्रथम चरण है. इतना ही नहीं, गलतियां प्रशिक्षक को यह जानने में मदद करेंगी कि वे कौन से क्षेत्र हैं जिनमें शिक्षार्थी को सुधार की आवश्यकता है.
- **लिखिए:** हर रोज़ सीखे गए शब्दों को लिखें. उन्हें ऐसे कागज पर लिखें जिससे स्मरण करना आसान हो.
- **ऊंचे स्वर में उच्चारण करें:** शब्दों की सूची तैयार करते समय उनका उच्चारण ऊंचे स्वर में करें. इससे आपको अपना उच्चारण सुधारने में मदद मिलेगी.
- **दोहराएं:** सीखे गए शब्दों और संरचनाओं को दोहराते रहें.
- **आगे पीछे करके सीखें:** नई चीजों को सीखते समय बीच-बीच में पहले सीखी गई चीजों को स्मरण करने से आपको अपने ज्ञान का आधार तैयार करने में मदद मिलेगी.

उच्चतर श्रेणी के प्रशिक्षार्थियों के लिए कुछ सुझाव: ये प्रशिक्षार्थी भाषा शिक्षण प्रक्रिया के अग्रवर्ती चरण में होते हैं और उन्हें भाषा की पर्याप्त जानकारी होती है; परंतु उन्हें अभिव्यक्ति के चार कौशलों पर नियंत्रण करने की आवश्यकता होती है ये हैं - सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना (एलएसआरडब्ल्यू). निश्चित रूप से ये कौशल जन्मजात नहीं हैं, परंतु निरंतर अभ्यास और कठिन परिश्रम द्वारा उन्हें बढ़ाया जा सकता है.

- **सुनने का कौशल:** भाषा सुनना सर्वाधिक नियमित प्रक्रिया है. संभवतः यह उपरोक्त चारों कौशलों में सबसे महत्वपूर्ण है. सुनने के अंतर्गत ग्रहण करना, सोचना और समझना, स्मरण रखना और जवाब देना शामिल है. सुनने के कौशल में सुधार के लिए किसी व्यक्ति को सुनने की प्रक्रिया के दौरान विरोधात्मक विचार लाए बिना वस्तुनिष्ठ बने रहना चाहिए. सुनने के दौरान चिंतन हालांकि महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, परंतु बहुत अधिक चिंतन करने से श्रोता विचार-विमर्श से बाहर जा सकता है. अतः श्रोता को सुनने और चिंतन करने के बीच एक संतुलन कायम करने की आवश्यकता होती है. लक्षित भाषा में पर्याप्त सुनना अक्सर लोगों के लिए यह चुनौती होती है; अतः इससे निपटने के लिए उन्हें फिल्में देखने और लक्षित भाषा में संगीत सुनने की कोशिश करनी चाहिए.
- **अभिव्यक्ति कौशल:** आज के तकनीकी-वैश्विक युग में विचार व्यक्त करना और जानकारी साझा करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है. अभिव्यक्ति कौशल के अभाव में किसी व्यक्ति के लिए उत्कृष्ट रोजगार प्राप्त करना एक बड़ी चुनौती है. बेहतर अभिव्यक्ति कौशल विकसित करने के लिए, आप हर रोज़ लिखित सामग्री को ऊंचे स्वर में पढ़ने की सामान्य यांत्रिक प्रक्रिया शुरू कर सकते हैं. इससे शिक्षार्थी को लक्ष्य भाषा के लिए सही उच्चारण विकसित करने में मदद मिलती है. इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी एक छोटे समूह का निर्माण कर सकते हैं ताकि लक्ष्य भाषा में विचार-विमर्श किया जा सके. वे आपस में लघु वार्ताएं और प्रस्तुतियां भी दे सकते हैं. इससे उनकी समझ बढ़ेगी और उन्हें रचनात्मक ढंग से लक्ष्य भाषा के इस्तेमाल का अवसर मिलेगा. इसके अतिरिक्त वाक्य रचनाओं को रटने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए; किसी भी शिक्षार्थी को लक्ष्य भाषा का प्रयोग करने में पर्याप्त आजादी दी जानी चाहिए और उसे व्याकरणिक अशुद्धियों के प्रति अधिक सचेत न रहने की छूट दी जानी चाहिए.
- **वाचन कौशल:** एक बेहतर लेखक और वक्ता बनने के लिए शिक्षार्थी को पढ़ने में अधिक समय लगाना चाहिए. इससे आप अद्यतन जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं. पढ़ने की आदत डालने के लिए शिक्षार्थी अपनी रुचि की पुस्तकों के साथ शुरुआत कर सकते हैं. इन पुस्तकों में हास्यकर पुस्तिकाएं, कथा-पुस्तकें, उपन्यास, प्रेरणा और प्रोत्साहन देने वाली पुस्तकें, जीवनियां, कविता आदि शामिल हो सकती हैं. समाचारपत्र, विशेषकर संपादकीय पढ़ने से भी वाचन कौशल सुधारने में मदद मिल सकती है.
- **लेखन कौशल:** यह अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय रूप है. लेखन कौशल में सुधार के लिए शिक्षार्थी को छोटे और साधारण वाक्य प्रयोग करने चाहिए. उसे जानकारी प्रदान करने में स्पष्ट और सही होने की आवश्यकता होती है. लेखन में शब्द जाल और अलंकृत भाषा से बचना चाहिए. अनुच्छेद के अंतर्गत दी गई दलीलें युक्तिसंगत होनी चाहिए (दावों के संदर्भ में प्रस्तावनाएं और निष्कर्ष होने चाहिए) और अनुच्छेदों के बीच सुसंगति होनी चाहिए. यह आवश्यक है कि प्रारूप को अंतिम प्रस्तुति से पहले कम से कम एक बार अवश्य दोहराया जाए.

विदेशी भाषा शिक्षण के जरिए कौशल विकास

- भाषा और सांस्कृतिक प्रवीणता में बढ़ोतरी होती है.
- विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवेदनशीलता बढ़ती है.
- स्वयं के प्रति और स्वयं की संस्कृति की समझ बढ़ती है.
- संज्ञानात्मक और जीवन कौशल में तीव्रता आती है.
- अभिव्यक्ति कौशल क्षमता (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) सुदृढ़ होती है.
- अन्य लोगों के विचारों और तौर तरीकों के प्रति खुले मन से सोचने में मदद मिलती है.
- विदेशी भाषा, संगीत और कला की व्यापक समझ विकसित होती है.
- वैश्विक व्यापार सम्पर्क रखने वाले किसी नियोक्ता के लिए उत्पादक ढंग से काम करने में मदद मिलती है.

क्या आपके भाषा कौशल का बाजार में लाभ उठाया जा सकता है?

कुछ व्यक्तियों में भाषा सीखने का कौशल जन्मजात होता है. वास्तव में ऐसे लोगों के लिए नई भाषा सीखना चुनौतीपूर्ण पहेली का समाधान करने जैसा होता है. उनकी श्रवण क्षमता अन्य भाषाओं के पैटर्न आसानी से ग्रहण करने योग्य होती है. उदाहरण के लिए वे जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, इटेलियन, रूसी आदि भाषाएं उतनी ही प्रवीणता के साथ बोल सकते हैं जितने प्रवीण वे देशी भाषा में होते हैं. इतना ही नहीं, वे अन्य भाषा आसानी से पढ़ना और लिखना सीख जाते हैं. इस तरह का असाधारण भाषा कौशल ऊंचे दामों पर बेचा जा सकता है. यहां तक कि औसत भाषा कौशल वाले व्यक्ति भी भाषा के जरिए बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते हैं. उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति ने कॉलेज में एक या दो भाषाएं पढ़ी हैं और उनमें पढ़ने और बोलने का औसत कौशल हासिल किया है (भले ही लिखने का कौशल कम रहा हो), परंतु वह अन्य देशों और संस्कृतियों से प्रेम करता है, तो ऐसा व्यक्ति विदेशी भाषाओं का इस्तेमाल करते हुए आसानी से रोजगार प्राप्त कर सकता है. विदेशी भाषा में प्रवीणता पर्यटन, प्रकाशन, मनोरंजन, भाषांतरण, अनुवाद आदि क्षेत्रों में रोजगार के द्वार खोल सकती है. ऐसा रोजगार न केवल विदेशी संस्कृति को जानने की अंतर्निहित इच्छा पूरी कर सकता है बल्कि तरक्की और विकास के अवसर भी प्रदान कर सकता है.

विदेशी भाषाओं में रोजगार की संभावनाएं

विदेशी भाषाएं ऐसे विद्यार्थियों के लिए संभावनाशील क्षेत्र हो सकती हैं, जिन्हें भाषाएं सीखने का शौक और अभिरुचि हो. इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उम्मीदवार में भाषाओं के प्रति अनुराग होना चाहिए. विदेशी भाषाओं का ज्ञान रखने वाले विद्यार्थियों के लिए रोजगार के निम्नांकित अवसर उपलब्ध हैं:

- **अनुवादक:** अनुवादक का कार्य किसी लिखित सामग्री को स्रोत भाषा से लक्षित भाषा में परिवर्तित करना है. परंतु अनुवादक को यह सुनिश्चित करना होता है कि अनुदित संस्करण का अर्थ मूल भाषा के अर्थ से भिन्न नहीं होना चाहिए. इस प्रकार अनुवादक को अपने कार्यक्षेत्र की गहरी जानकारी होनी चाहिए ताकि वह मूल पाठ की शैली और सार को बनाए रखते हुए अपना कार्य कर सके. आमतौर पर अनुवादक के कार्य में निम्नांकित पाठ सामग्री शामिल होती है: लिखित अनुवाद प्रदान करना, प्रतियों का संपादन करना और सारांश तैयार करना. अनुवादकों की भर्ती आमतौर पर उद्योगों, प्रकाशन गृहों, सरकारी और अनुसंधान संगठनों द्वारा की जाती है.
- **दुभाषिए:** दुभाषिए का कार्य किसी भाषा का मौखिक अनुवाद प्रस्तुत करना है. किसी दुभाषिए का प्रमुख कार्य अर्थ में किसी प्रकार का बदलाव किए बिना प्रतिभागियों के बीच संवाद कायम करना है. साथ-साथ भाषांतरण बैठकों, सम्मेलनों या व्यापारिक सेमिनारों के लिए किया जाता है. यहां दुभाषिए का कार्य एक साउंड-प्रूफ कमरे में प्रत्येक वक्ता को सुनना और साथ-साथ विचार विमर्श का लक्ष्य भाषा में रूपांतरण करना है. भाषणों के दौरान सतत भाषांतरण को वरीयता दी जाती है जिसमें वक्ता द्वारा विराम के दौरान दुभाषिया बोले गए कथनों को सतत रूपांतरित करता है. सम्पर्क भाषांतरण के दौरान दुभाषिया छोटे वाक्यांशों और वाक्यों का इस्तेमाल करता है. यह आमतौर पर ऐसी स्थिति में किया जाता है जहां लिखना कठिन हो. इससे पृथक भाषा पृष्ठभूमियों वाले व्यक्तियों के बीच संवाद कायम किया जाता है. दुभाषिए न्यायिक सेवाओं, स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक कार्य जैसे क्षेत्रों में आसानी से रोजगार प्राप्त कर सकते हैं.

विदेशी भाषा शिक्षक और प्रशिक्षक:

विदेशी भाषा पढ़ाना किसी अन्य संस्कृति की शिक्षा देने के बराबर है. प्रशिक्षक को चाहिए कि वह संस्कृति को भाषा सीखने के अभिन्न अंग के रूप में समझे. इससे विद्यार्थियों की सोच और परिकल्पना को व्यापक बनाने में मदद मिलेगी. विदेशी भाषा की जानकारी रखते हुए आप शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर अवसर प्राप्त कर सकते हैं. विदेशी भाषा प्रशिक्षक प्राथमिक स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक विभिन्न प्रकार के शैक्षिक प्रतिष्ठानों में काम कर सकते हैं. इसके अतिरिक्त कारपोरेट संगठन विदेशी भाषा प्रशिक्षकों की भर्ती करते हैं ताकि वे अपने कर्मचारियों को विशिष्ट भाषाओं का प्रशिक्षण प्रदान कर सकें. इससे विभिन्न देशों में कर्मचारियों को विभिन्न स्थानों पर तैनात करने की प्रक्रिया आसान हो जाती है.

- **व्यावसायिक भाषाविद्:** भाषाविद् मानव भाषा-उसकी ध्वनियों, संरचना, अर्थ और व्यवहार के बारे में व्यवस्थित अध्ययन करते हैं. इसके अतिरिक्त वे विभिन्न भाषाओं में सर्वत्र विद्यमान सार्वभौमिक पैटर्नों का अध्ययन करते हैं और उन्हें संज्ञानात्मक एवं सामाजिक संदर्भों में स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं. वे यह समझने का प्रयास करते हैं कि कोई व्यक्ति किस तरह द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा की जानकारी प्राप्त कर सकता है. भाषाविद् विभिन्न प्रकार के संगठनों जैसे विश्वविद्यालयों, सॉफ्टवेयर कंपनियों, अनुसंधान संस्थानों, कंसल्टेंसी कंपनियों, सरकारी और रक्षा संगठनों के लिए अध्ययनों का संचालन करते हैं.
- **मनोरंजन उद्योग में रोजगार** भारतीय मनोरंजन उद्योग विशेषकर बॉलीवुड का प्रभाव विश्वभर में बढ़ रहा है. भारत से बाहर सुचारू रूप से काम करने के लिए अनुवादकों, दुभाषियों, 'प्रूफरीडरों, वायसओवर (स्वर देने वालों) करने वालों और संपादकों की भारी मांग है. अनेक संगठन सब-टाइटलिंग, डबिंग, वेबसाइट स्थापना और विदेशी भाषा कला कार्य के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं. इसी प्रकार मीडिया (टेलीविजन, पत्र पत्रिकाएं आदि) में भी अनुवादकों, प्रूफरीडरों और संपादकों की आवश्यकता पड़ती है.
- **अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में रोजगार** यूनेस्को, यूनीसेफ, डब्ल्यूएचओ, संयुक्त राष्ट्र, रेडक्रॉस आदि अंतर्राष्ट्रीय संगठन समूचे विश्व में व्याप्त हैं. अतः उन्हें भाषा विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है ताकि वे सभी देशों में सुचारू रूप से काम कर सकें. उदाहरण के लिए विश्व बैंक विकासशील देशों को उनके विकास और वृद्धि के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है. अतः उसे ऐसे व्यवसायियों की आवश्यकता पड़ती है जो अंतर्राष्ट्रीय नीतियों को बेहतर ढंग से समझते हों. विदेशी भाषा कौशल ऐसे कार्यों के लिए अपेक्षित योग्यताओं में से एक हो सकता है.
- **यात्रा एवं पर्यटन** कम से कम एक विदेशी भाषा में प्रवीणता पर्यटन उद्योग में आकर्षक रोजगार प्रदान कर सकती है. इस उद्योग में रोजगार प्रदान करने वालों में उड्डयन उद्योग, होटल, विदेशी दूतावास आदि शामिल हैं.
- **फ्रीलांसिंग यानी स्वतंत्र कार्य** विदेशी भाषा पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने के बाद लोग अक्सर स्वतंत्र रूप से काम करना पसंद करते हैं. ऐसे व्यक्तियों को अनुवाद कार्यालयों, विदेशी कंपनियों, प्रकाशन गृहों और अनुसंधान संगठनों से आसानी से असाइनमेंट (अनुबंधित कार्य) प्राप्त हो जाते हैं.

विदेशी भाषाओं में पाठ्यक्रम संचालित करने वाले संस्थान

देशभर में अनेक ऐसे संस्थान और विश्वविद्यालय हैं जो विदेशी भाषाओं में पूर्णकालिक डिग्री पाठ्यक्रम और अल्पावधि डिप्लोमा एवं प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम संचालित करते हैं. इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
- इंग्लिश एंड फॉरेन लेंग्वेजेज़ यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
- इंग्लिश एंड फॉरेन लेंग्वेजेज़ यूनिवर्सिटी, लखनऊ
- सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ इंडियन लेंग्वेजेज़, मैसूर
- दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- गोएथ इंस्टिट्यूट, मैक्स मूलर भवन, नई दिल्ली
- अलायंस फ्रेंचाइज़ी डी दिल्ली, नई दिल्ली
- द चाइनिज़ लेंग्वेज इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली
- इंस्टिट्यूट ऑफ रशियन लेंग्वेज, नई दिल्ली
- इग्नू-स्कूल ऑफ फॉरेन लेंग्वेजिज़ (एसओएफएल), नई दिल्ली
- हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, शिमला
- विश्व-भारती यूनिवर्सिटी, वेस्ट बंगाल
- यूनिवर्सिटी ऑफ लखनऊ, लखनऊ

(सूची केवल संकेतात्मक है)

पारिश्रमिक : किसी विदेशी भाषा में पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद आप किसी प्राइवेट या सरकारी संगठन में आसानी से रोजगार प्राप्त कर सकते हैं. कार्य का स्वरूप भाषा, अनुभव और उम्मीदवार की शिक्षा पर निर्भर करता है. सार्वजनिक क्षेत्र में नियोजित व्यक्ति सरकार के नियमों एवं शर्तों के अनुसार वेतन प्राप्त करता है; जबकि डॉक्टरल उपाधि के साथ विदेशी भाषा प्रशिक्षक निजी विश्वविद्यालयों के साथ काम करते हुए रु. 30,000 और रु. 90,000 के बीच प्रति माह वेतन प्राप्त करते हैं. इसके अतिरिक्त कंपनियों में प्रशिक्षक, अनुवादक, दुभाषिए और फ्रीलांसर के रूप में कार्य करने को वरीयता देने वाले व्यक्ति हर महीने 10,000 रुपये से लेकर 70,000 रुपये तक अर्जित कर सकते हैं. उनकी आय वर्ष दर वर्ष बढ़ सकती है.

(राहुल कुमार शुक्ल, भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद में शैक्षिक असोशिएट हैं, ई-मेल: rahul.shukla@fullbrightmail.org) (सुश्री शिखा दीक्षित गलगोटिया यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा में सॉफ्ट-स्किल्स प्रशिक्षक हैं. ई-मेल: shikha.dxt@gmail.com).

रोज़गार समाचार

पुष्पेंदर कौर (महाप्रबंधक एवं मुख्य संपादक)
डॉ. ममता रानी (संपादक)
हसन जिया (वरिष्ठ संपादक)
राकेशरेणु (वरिष्ठ संपादक)
वी. के. मीणा (संयुक्त निदेशक) (उत्पादन)
संदीप निगम (उत्पादन अधिकारी)
पी.के. मंडल (वरिष्ठ कलाकार)
के.पी. मणिलाल (लेखा अधिकारी)

ई-मेल-महाप्रबंधक एवं मुख्य संपादक
director.employmentnews@gmail.com
विज्ञापन : enewsadvt@yahoo.com

संपादकीय :	: 26163055
विज्ञापन	: 26104284
टेलीफैक्स	: 26193012
वितरण	: 26107405
टैलीफैक्स	: 26175516
प्रोडक्शन	: 26177529
लेखा (विज्ञापन)	: 26193179
लेखा (वितरण)	: 26182079

प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के लिए **डॉ. साधना राउत,** अपर महानिदेशक द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित और प्रिंटिंग प्रेस अमर उजाला पब्लिकेशन लिमिटेड, सी-21 व 22, सेक्टर-59, नोएडा-201301 में मुद्रित, रोज़गार समाचार (सूचना और प्रसारण मंत्रालय) ईस्ट ब्लाक-IV, लेवल-5, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066 द्वारा प्रकाशित, संपादकः डॉ. ममता रानी